समय पर दो अलग-अलग विचारधारा वाले लोगों द्वारा एक ही बात कहना संयोग नहीं है, बल्कि यह भारत है। भारतीय मानस का अवलंबन करके कोई भी यही कहेगा। भारत में विकास अन्तोदय की कसौटी है। विकास पर्यावरण का मित्र है। मित्र होना कठिन बात है ज़्योंकि उसमें मर्यादा आती हैं। हमें पर्यावरण रक्षा की भी मर्यादा जाननी पड़ेंगी। जड़ी बूटी के लिए वैद्य जंगल से वनस्पति लाते हैं, लेकिन भाव और नियम में फर्क है। वो जंगल से जितनी वनस्पति लाते थे, उतने पेड़ भी लगाते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम राम को धर्म का प्रतिमान माना गया है। उस प्रतिमान पर ही नानाजी ने काम किया है। नानाजी ने ये सब धर्म से प्रेरित होकर किया है। धर्म की प्रेरणा से ही नानाजी ने चित्रकूट में एकात्म मानव दर्शन का जीवंत प्रतिमान खड़ा किया है। यह पाया गया कि मनुष्य का सुख केवल रोजी-रोटी मिलना नहीं है। हम अपना विकास ठेके पर नहीं देते। यह हमारी परज़्परा नहीं है। चित्रकूट में नानाजी ने यही किया। नागपुर में भी प्रकल्प